पाली

कक्षा–11

कोविड–19 महामारी के कारण शैक्षिक सत्र–2021–22 में विद्यालयों में समय से पठन–पाठन का कार्य न हो पाने की स्थिति में सम्यक विचारोपरान्त विषय विशेषज्ञों की समिति द्वारा निम्नवत् 30 प्रतिशत पाठ्यक्रम कम किये जाने की अनुशंसा की गयी है:–

1-गद्य

(क) महापरिनिब्बान सुत्त (तृतीय भाणवार)

(ख) पालि प्रवेशिका (पा0 17 से 18)

2-पद्य-

(क) धम्मपद (वग्ग 20 से 22)

(ख) चरिया पिटक (महागोविन्दचरिया)

उपर्युक्त के अनुक्रम में 70 प्रतिशत का पाठ्यक्रम निम्नवत् है–

पाली

कक्षा-11

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न-पत्र 3 घण्टे का होगा।

1-गद्य-(क) महापरिनिब्बान सुत्त (प्रथम तथा द्वितीय भाणवार) 15+15=30

(ख) पालि प्रवेशिका (पाठ 13 से 16)

2-पद्य-(क) धम्मपद (वग्ग 15 से 19) 15+15=30

(ख) चरियापिटक (01 से 04 चर्यायें)

3-व्याकरण, निबन्ध तथा अनुवाद 10+10+10=30

(1) व्याकरण--

(क) शब्द रूप--निम्नांकित संज्ञाओं तथा उनके अनुरूप अन्य शब्दों के रूप 10 अंक

[1] पुल्लिंग--बुद्ध

[2] स्त्रीलिंग--लता, रत्ति

[3] नपुंसकलिंग--फल

(ख) धातु रूप--वर्तमान, भूत तथा अनागत काल में निम्नलिखित धातुओं के रूप-

भू, हस, पठ, गम, वद, रक्ख, पच, नम, दिस, बुध, रूच, सक, लिख, भुज, चुर, चित्त।

(ग) सन्धियाँ--निम्नलिखित सूत्रों पर आधारित होंगी, परन्तु सूत्रों को कंठस्थ करना आवश्यक नहीं है।

[क] स्वर सन्धि--(1) सरो लोपो सरे (2) परो क्वचि (3) न व्दे वा (4) ए ओ नं

[ख] व्यंजन सन्धि--(1) व्यंजने दीघरस्सा।

[ग] निग्गहीतं सन्धि--(1) निग्गहीतं।

(घ) समास--निम्नलिखित समासों की सामान्य परिभाषा तथा उदाहरण :

[1] तत्पुरुष [2] कर्मधारय समास।

(2) निबन्ध--पालि भाषा में संक्षिप्त निबन्ध सरल सात वाक्यों में 10 अंक

इसिपतन, सिद्धत्थकुमारो, लुम्बिनी।

(3) अनुवाद--हिन्दी वाक्यों का पालि में रूपान्तर (अनुवाद का उद्देश्य छात्र/छात्राओं को पालि भाषा में वाक्य रचना एवं पालि भाषा का संगठन/पद्धति से परिचित कराना है)। 10 अंक

नोट :--अनुवाद के लिये कोई पाठ्य-पुस्तक निर्धारित नहीं है।

(4) **पालि साहित्य का इतिहास** (सुत्तपिटक, प्रथम बोद्ध संगीत का सामान्य परिचय) 10 अंक

निर्धारित पाठ्य पुस्तकें

(1) महापरिनिब्बान सुत्तं, सम्पादक- भिद्धु धर्मरक्षित, प्रकाशक ज्ञान मण्डल लिमिटेड, कबीर चौरा, वाराणसीं

(2) पालि प्रवेशिका, संकलनकर्ता- डॉ0 कोमलचन्द्र जैन, तारा पब्लिकेशन, वाराणसी।

(3) धम्मपद, सम्पादक-भिक्षुरक्षित, प्रकारशक महाबोधि सभा, सारनाथ, वाराणसी।

(4) चरियापिटक, अनुवादक- भिक्षु धर्मरक्षित, प्रकाशक मास्टर खेलाड़ीलाल संकटा प्रसाद, वाराणसी।

(5) पालि व्याकरण, लेखक- भिक्षु धर्मरक्षित, प्रकाशक ज्ञान मण्डल लिमिटेड कबीर चौरा, वाराणसी।

(6) पालि महाव्याकरण, लेखक-भिक्षु जगदीश कश्यप, प्रकाशक महाबोधि सोसायटी सारनाथ, वाराणसी।

(7) पालि साहित्य का इतिहास, लेखक– भिक्षु धर्मरक्षित, प्रकाशक ज्ञान मण्डल लिमिटेड कबीर चौरा, वाराणसी।

(8) मैनुअल ऑफ पालि, लेखक–सी0एस0 जोशी, प्रकाशक ओरियन्टल बुक एजेन्सी, पूना।